शोध सारांश

कहानी के प्रति विशेष रुचि होने के कारण मैंने अपने शोध विषय का चयन करते समय कहानी को प्रमुखता दी। आखिर कहानी की रचना प्रक्रिया को समझने के लिए मैंने कहानियों के शिल्प पर शोध प्रस्तुत करने का विचार किया और अंततः मैंने **"पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' और सआदत हसन 'मंटो' की चयनित कहानियों का शिल्प विधान"** समस्या को अपने शोध विषय के लिए चयनित किया। इस शोध कार्य में कथा साहित्य की इन दोनों ही भाषाओं – हिंदी और उर्दू की कहानियों के शिल्प-विधान के सन्दर्भ में वर्णन और विश्लेषण करने का प्रयास किया है।

'उग्र' और 'मंटो' दोनों ने ही समाज में व्याप्त अनेक विषमताओं एवं विसंगतियों- दरिद्रता, नग्नता, दहेज, बाल-विवाह, ग्रामीण–शोषण, छुआछूत, बेरोजगारी, कालाबाजारी, भ्रष्टाचार, जातिवाद, संत्रास, हीनभाव, कुंठा, शून्यता, अकेलापन, विषाद, अजनबीपन आदि के यथार्थ चित्रण को अपनी कहानियों के विषय के रूप में चुना है, जो समकालीन रचनाकारों की तुलना में भिन्न है। मैंने अपने शोध प्रबंध में तुलनात्मक के साथ-साथ वर्णनात्मक प्रविधि को अपनाया है।

इस विषय को एक अलग दृष्टि से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। देखा जाये तो अब तक इन दोनों ही लेखकों की रचनाओं का इस संदर्भ में अध्ययन प्रस्तुत नहीं है। मेरी जानकारी में चयनित कहानियों में शिल्प-विधान पक्ष को लेकर कोई शोध या आलोचना कार्य अथवा विवेचनात्मक, वर्णनात्मक अध्ययन दृष्टिगत नहीं होता। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर मैंने अपने शोध प्रबंध के लिए उपर्युक्त विषय का चयन किया है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध उपसंहार सहित पाँच अध्यायों में विभक्त है। साथ ही अंत में एक विस्तृत सन्दर्भ सूची भी प्रस्तुत है।

'कहानी में शिल्प का सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य' नामक पहले अध्याय में स्वतंत्रता के पूर्व तथा पश्चात के लेखकों की रचनाओं के शिल्प में तथा बाद के शिल्प में क्या भिन्नता थी, उसको स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। शिल्प को समझने के लिए शिल्प के अर्थ तथा परिभाषा को प्रस्तुत किया गया है तथा स्वरुप की विवेचना करते हुए उसके विविध आयामों और तत्वों का विवेचन और विश्लेषण

किया गया है। साथ ही साहित्य में शिल्प का क्या स्थान तथा महत्व है उसको रेखांकित करने का प्रयास किया है।

'उग्र की कहानियों का शिल्प' नामक दूसरा अध्याय में हिंदी के विशिष्ठ लेखक पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' का जीवन परिचय तथा उनके कृतित्त्व के साथ ही उनकी प्रतिनिधि कहानियों तथा उनकी कहानियों के शिल्प पर विस्तारपूर्वक विचार प्रस्तुत किया गया है।

'मंटो की कहानियों का शिल्प' नामक तीसरे अध्याय में उर्दू के निराले कथाकार तथा विवादास्पद लेखक के रोचक जीवन परिचय तथा कृतित्व की चर्चा के उपरांत उनकी कहानियों एवं उनकी कहानियों के शिल्प पर विस्तारपूर्वक चर्चा की गई है।

''उग्र' और 'मंटो' की कहानियों का शिल्प-विधान : तुलनात्मक अध्ययन' सम्बन्धी चौथे अध्याय में दोनों रचनाकारों की कहानियों के शिल्प की तुलना की गयी है, जिनमें उनकी समताओं तथा विषमताओं पर प्रकाश डाला गया है। शिल्प सम्बन्धी विविध आयामों को विश्लेषित करने की कोशिश की गई है। इसके लिए इन दोनों लेखकों की भाषा, बिम्ब, शैली, संवाद, परिवेश आदि को आधार बनाया गया है।

'उग्र' और 'मंटो' की उच्च कोटि की रचनाएँ उन्हें सफल साहित्यकार कहने का सच्चा अर्थ देती है। सचमुच साहित्य जगत में दोनों ही लेखकों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। 'उग्र' और 'मंटो' का कथा साहित्य कथ्य और शिल्प दोनों स्तरों पर समृद्ध और उल्लेखनीय है। कहानी शिल्प की दृष्टि से देखा जाये तो 'उग्र' और 'मंटो' सफल रहे हैं। उनकी कहानियाँ सुनियोजित ढंग से प्रारम्भ होती है और उसी प्रकार से रोचकपूर्ण ढंग से कहानियों का अंत भी होता है। शिल्प 'उग्र' और 'मंटो' की कहानियों का सशक्त पक्ष रहा है। 'उग्र' और 'मंटो' की कहानियों के शिल्प की बात की जाए तो दोनों का शिल्प प्रभावशाली रहा। जो संक्षिप्त रूप के आगे प्रस्तुत किया जा रहा है -

'उग्र' और 'मंटो' दोनों के शिल्प-विधान में समानता के साथ-साथ कुछ विषमताएँ भी हैं, जो इन दोनों रचनाकारों को एक दूसरे से अलग करती है तथा साहित्य के क्षेत्र में इनका अलग-अलग स्थान निर्धारित करती है। जहाँ तक समानताओं का प्रश्न है, इन दोनों रचनाकारों ने भाषा को सरल और प्रभावी बनाने के लिए अपनी भाषा में तद्भव और उर्दू के शब्दों का बहुलता से प्रयोग किया है। भाषा को जन-जन तक पहुँचाने के लिए लोक में प्रचलित मुहावरों को भी अपनी भाषा में स्थान दिया है। शैली की

दृष्टि से दोनों ही रचनाकारों ने वर्णात्मक तथा चित्रात्मक शैली को प्रमुखता दी है। बिम्ब का निर्माण करने में दोनों रचनाकारों को महारथ हासिल है। किन्तु इन समानताओं के अतिरिक्त कुछ असामनताएँ भी हैं। यथा – उग्र ने अपनी भाषा में अँग्रेजी शब्दों की अपेक्षा क्षेत्रीय शब्दों का अधिक प्रयोग किया है तो वहीं मंटो ने अपनी भाषा को सफल बनाने के लिए क्षेत्रीय शब्दों की अपेक्षा अँग्रेजी शब्दों पर अधिक विश्वास दिखाया है, दोनों ही अपने इस प्रयोग में सफल भी हुए हैं। यद्यपि बिम्ब के प्रयोग में दोनों लेखकों को महारथ हासिल है तथापि यह कहना अनुचित न होगा कि बिम्ब निर्माण में मंटो उग्र से आगे निकल गए हैं। जहाँ तक संवाद का प्रश्न है यह कथानक को आगे बढ़ाने, पात्रों का चरित्र चित्रण करने, कौतूहल पैदा करने के लिए अति आवश्यक तत्त्व है। उग्र ने इसका प्रयोग बड़ी कुशलता से किया है लेकिन मंटो ने अपनी कहानियों में उग्र की तुलना में संवाद का प्रयोग कम किया है। उनकी कहानियाँ संवाद के अभाव में एक रिपोर्ट मालूम होती है, लेकिन उनका प्रभाव कम नहीं होता। इसी एक जगह आकर उग्र शिल्प-विधान के श्रेणी में मंटो से आगे निकाल जाते हैं।

'उग्र' और 'मंटो' की कहानियों का प्रमुख उद्देश्य मनोरंजन न होकर समाज में स्थित समस्याओं को प्रकाश में लाना है। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि 'उग्र' और 'मंटो' का योगदान निश्चित रूप से महत्वपूर्ण और उपयुक्त है। उग्र ने लगभग सभी विधाओं में अपनी लेखनी सफलता से चलाई है तथा मंटो ने कहानियों के बल पर विश्व में अपनी जगह बनाई। शिल्प के सन्दर्भ में देखा जाए तो 'उग्र' और 'मंटो' की कहानियों के शिल्प में भिन्नता और विभिन्नता दोनों विद्यमान है। उपयुक्त अध्यायों के आधार पर स्पष्ट हो रहा है। प्रत्येक रचनाकार अपने युग एवं परिस्थितियों के अनुसार शिल्प को विकसित करता रहता है, 'उग्र' और 'मंटो' की कहानियों में शिल्प के सन्दर्भ में यह तथ्य पूर्णतः स्पष्ट होता है।

अंत में मैंने उपसंहार के अंतर्गत विवेच्य सभी अध्यायों का निष्कर्ष एवं प्रस्तुत शोध कार्य की उपलब्धियों को संक्षेप में प्रस्तुत किया है।

समग्रतः कहा जा सकता है कि 'उग्र' और 'मंटो' दोनों ही लेखकों का साहित्य जगत में ऊचाँ स्थान है। दोनों ही रचनाकार प्रतिभा सम्पन्न कलाकार है। चाहे वह शिल्प की दृष्टि से हो या कथानक की दृष्टि से। इन दोनों के शिल्प का गहन अध्ययन करने के बाद इनके शिल्प की सामनताओं और विभिन्नताओं को जाना जा सकता है। ये विभिन्नताएँ इन दोनों की कमियाँ न होकर इन दोनों की विशेषताएँ हैं, जो साहित्य जगत में इनका स्थान निर्धारित करती हैं।